Roll No. ..... Total Pages : 4

MDQ/M-20 **7670**

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Paper–VI

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) नागमती चित्तउर पंथ हेरा। पिउ जो गए फिरि कीन्ह न फेरा।।
नागरि नारि काहु बस परा। तेरँ बियोहि मो सौं चितु हरा।।
सुवा काल होइ लेइगा पीऊ। पिऊ नहिं जात, जा बरू जीऊ।।

भएउ नरायन बाँवन करा। राज करत राजा बलि छरा।।
करन वान लीन्हेउ कै छंदू। विप्र रूप धरि झिलमिल इन्दू।।
मानत भोग गोपी चँद भोगी। लै अपसवा जलंधर जोगी।।
लेई कान्हहि भा अकरूर अलोपी। कठिन बिछोह जिअहिं किमि गोपी?

(ख) नागमती दु:ख विरह अपारा। धरती सरग जरै तेहि झारा।।
नगर कोट घर बाहिर सूना। नौजि होइ घर पुरुख बिहूना।।
तू काँवरू परा बस लोना। भूला जोग, छरा जनु होना।।
ओहि तोहि कारन मरि भै बारा। रही नाग होइ पवन अधारा।।
कह चील्हन पिय पहँ लै, खाहू! माँसु न, कया जो रुचैं काहू।।

बिरह मँजूर, नाग वह नारी। तूँ मंजार करु बेगि गोहारी।।
माँसु गरा पाँजर होइ परी। तूँ जोगी अबहुँ पहुँचु लै जरी।।

(ग) रसना कहौं जो कहौं जो कह रस बाता। अंब्रित वचन सुनत मन राता।।

हरै सो सुर चात्रिक कोकिला। बीन बंसि वह बैनु न मिला।।
चात्रिक कोकिला रहहिं जो नाहि। सुनि वन बैन लासि छपि जाहीं

भरे पेम मधु बोला। सुनै सो माति धुर्मि के डोला।।
चतुर वेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साम अर्चबन माहाँ।।

एक एक बोल अरथ चौगुना। इंद्र मोह बरम्हाँ सिर धुना।।

(घ) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छूवै।
हँसि बोलन मैं छवि-फूलन की बरषा, उर-ऊपर जाति ह्वै।
लट लोट कपोल कलोल करै, कल कंठ बनो जलजावलि द्वै
अँग अँग तरंग उठै दुति की, परि है मनौ रूप अबै धर च्वै।।

(ङ) चंद चकोर की चाह करै घनआनंद स्वाति पपीहा कौं धावै।
त्यौ त्रसरैनि के ऐन बसै रवि मीन पै दीन छै सागर आवै।
मोसों तुम्हें सुनौ जान कृपानिधि नेह निबाहिबो यौछवि पावै।
ज्यों अपनी रुचि राचि कुबेर सु रंकहि लै निज अंक बसावै।

(च) अति सू सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहां सांचे चलै तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे बिसांक नहीं।
घनआन्द प्यारे सुजान सुनो जहाँ तक तैं दूसरो आंक नहीं।
तुम कौन धौ पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।

(3×7=21)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से **तीन** का उत्तर दीजिए:

(क) सूरदास की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

(ख) सूरदास के शृंगार वर्णन का सिंहावलोकन कीजिए।

(ग) भ्रमरगीत परम्परा में सूर का स्थान निर्धारित कीजिए।

(घ) सूर वात्सल्य रस के कवि थे- इस कथन की विवेचना कीजिए।

(ङ) सूर के काव्य में प्रकृति-चित्रण का विवेचन कीजिए।

(च) भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य का वर्णन हुआ है- इस कथन की विवेचना कीजिए। (3×12=36)

3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** के उत्तर दीजिए:

(क) रैदास की भक्ति।

(ख) रहीम की कृष्ण भक्ति।

(ग) केशव का आचार्यत्व।

(घ) भूषण की वीरभावना।

(ङ) गुरु गोबिन्द सिंह की चण्डी दी वार।

(च) गुरु गोबिन्द का विचित्र नाटक।

(छ) भूषण की रचनाओं का परिचय।

(ज) रैदास का जीवन परिचय।

(झ) रैदास की दार्शनिक भावना।

(ञ) रहीम के दोहों की भाषा।

(ट) केशव की अलंकार-योजना। (5×3=15)

4. सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) सूरदास कृत 'साहित्य-लहरी' को मुख्यत: किस प्रकार का ग्रंथ माना जाता है?

(ख) बल्लभाचार्य ने सूरदास को किस प्रकार की भक्ति में पदों को रचना करने का आह्वान किया?

(ग) 'सूरसागर' के किस प्रसंग में सूरदास के वाग्वैदग्ध्य के दर्शन होते हैं?

(घ) घनानंद किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे?

(ङ) घनानंद के काव्य की प्रमुख विशेषता क्या है?

(च) 'पद्मावत' में दोहा-चौपाई का क्या क्रम है?

(छ) शास्त्रीय दृष्टि से विरह की **चार** अवस्थाएँ लिखिए।

(ज) नागमती वियोग खण्ड में किस पद्धति का अनुसरण हुआ है?

(1×8=8)